IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जिला सिरसा के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में सांगीतिक शिक्षा की स्थिति: एक मूल्यांकन

***सरिता रानी, शोधार्थी, प्रदर्शन एवं ललित कला विभाग**

****डॉ. रिशपाल सिंह विर्क, सह–आचार्य, प्रदर्शन एवं ललित कला, विभाग, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा**

सारांश: हरियाणा राज्य भारत के उत्तर-पश्चिम में स्थित एक समृद्ध राज्य है। जिसके 22 जिलों में सिरसा क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा जिला है। जिसके महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में संगीत शिक्षा को लेकर वर्तमान में उच्च शिक्षा संस्थानों की क्या स्थिति है? किन-किन महाविद्यालयों में संगीत विषय स्वतंत्र रूप से पढ़ाया जा रहा है? उनके पास संसाधनों की स्थिति क्या है? शिक्षकों की योग्यता, छात्रों की संख्या और उनके कैरियर विकल्प क्या हैं? इन सभी पहलुओं का गहराई से अध्ययन करना समय की मांग है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह शोध कार्य "जिला सिरसा के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में सांगीतिक शिक्षा की स्थिति: एक मूल्यांकन" विषय पर केन्द्रित है। जिसमें सिरसा जिले के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में सर्वेक्षण के माध्यम से संगीत शिक्षकों के साक्षात्कार द्वारा संगीत की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया तथा समस्याओं के निवारण के लिए सुझाव दिए गए हैं।

विशेष शब्द: महाविद्यालयऔर विश्वविद्यालय, संगीत, शिक्षण, स्थिति

संगीत एक ऐसी दिव्य कला है जो न केवल मनुष्य के हृदय को छूती है बल्कि आत्मा को भी एक विशिष्ट शांति और आनंद प्रदान करती है। भारतीय संस्कृति में संगीत को 'नाद ब्रह्म' की संज्ञा दी गई है अर्थात् यह साक्षात् ईश्वर का ही रूप माना गया है। प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक अनुसंधानों तक संगीत को न केवल मनोरंजन का माध्यम बल्कि मानसिक संतुलन, आध्यात्मिक उन्नयन और शैक्षिक विकास का भी प्रमुख साधन माना गया है। वर्तमान समय में जब शैक्षणिक जगत में बहुआयामी विकास की आवश्यकता महसूस की जा रही है तब संगीत शिक्षा का स्थान ओर भी महत्वपूर्ण हो गया है। यह एक पूर्ण अकादमिक विषय के रूप में स्थापित हो चुका है।

हरियाणा राज्य जो कि भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में स्थित है और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत समृद्ध है। यहां की लोक-संस्कृति, लोक-गीत और लोक-नृत्य इस बात के परिचायक हैं कि संगीत इस क्षेत्र के जन-जीवन में गहराई से समाया हुआ है। हालांकि औपचारिक संगीत शिक्षा की स्थिति को लेकर विशेष अध्ययन अपेक्षित रहा है। जिले के महाविद्यालयों में संगीत विषय की उपलब्धता, उसकी शिक्षण व्यवस्था, छात्रों की रुचि और भविष्य की संभावनाओं को समझना आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य:

- सिरसा जिले के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संगीत शिक्षा की वर्तमान स्थिति का सर्वेक्षण करना।
- संगीत शिक्षा के लिए उपलब्ध संसाधनों एवं उपकरणों का आकलन करना।
- संगीत शिक्षकों की उपलब्धता, प्रशिक्षण स्तर और उनकी योग्यता, संसाधनों एवं पाठ्यचर्या की गुणवत्ता का विश्लेषण।
- विद्यार्थियों की संगीत शिक्षा में रुचि, भागीदारी और अभिप्रेरणा का मूल्यांकन करना।

- संगीत शिक्षा के क्षेत्र में आ रही समस्याओं और चुनौतियों की पहचान करना।
- संगीत शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रदान करना।

शोध की सीमाएँ

- यह शोध सिरसा जिले के सभी महाविद्यालयों तक सीमित रहेगा।
- अन्य शैक्षणिक संस्थानों पर यह शोध लागू नहीं होगा।
- शोध में केवल संगीत शिक्षा से संबंधित संसाधन, शिक्षक एवं विद्यार्थी पक्ष का ही विश्लेषण किया जाएगा अन्य सामाजिक और आर्थिक कारकों को विस्तार से नहीं लिया जाएगा।

जिला सिरसा: एक संक्षिप्त परिचय

हरियाणा राज्य का सिरसा जिला सांस्कृतिक विविधता और ऐतिहासिक धरोहरों से परिपूर्ण है। क्षेत्रफल की दृष्टि से सिरसा हरियाणा का सबसे बड़ा जिला है। यह जिला न केवल कृषि प्रधान है बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी निरंतर प्रगति कर रहा है। जिले में सरकारी और निजी दोनों प्रकार के महाविद्यालय स्थित हैं जिनमें विभिन्न विषयों की पढ़ाई होती है। इन महाविद्यालयों में संगीत विषय भी कई संस्थानों में पढ़ाया जाता है लेकिन इसकी विस्तृत स्थिति, संसाधनों की उपलब्धता, छात्रों की संख्या, शिक्षकों की योग्यता आदि की जानकारी परंपरागत रूप से बहुत सीमित रही है।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जिला सिरसा के विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा की वर्तमान स्थिति, उपलब्ध संसाधनों और उसकी गुणवत्ता का मूल्यांकन करना है। साथ ही यह जांचना है कि क्या इन महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा को लेकर पर्याप्त गंभीरता और संसाधन उपलब्ध हैं? जिनकी वर्तमान समय में आवश्यकता है। यह सर्वेक्षणात्मक अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त वास्तविक स्थितियों को उजागर करता है। जो न केवल क्षेत्रीय स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता, संसाधनों और दृष्टिकोणों को समझने में मदद करता है बल्कि सुधार की दिशा में नीतिगत बदलाव की आवश्यकता को भी पहचानता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि जिले के विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए कौन से कदम उठाए जा सकते हैं। और किस प्रकार के संसाधनों और शिक्षकों की आवश्यकता है। यह अध्ययन केवल एक शैक्षणिक दस्तावेज तक सीमित नहीं रहे बल्कि इसके निष्कर्ष और सुझाव नीति-निर्माताओं, शिक्षा विभाग, महाविद्यालय प्रशासन और छात्रों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इससे जिला स्तर पर संगीत शिक्षा के उत्थान में सहायता मिल सकती है। यदि यह अध्ययन व्यापक निष्कर्ष प्रस्तुत करता है, तो अन्य जिलों के लिए भी यह एक मॉडल के रूप में उपयोगी होगा।

हर शोध कार्य की कुछ सीमाएं होती हैं। यह अध्ययन केवल जिला सिरसा के महाविद्यालयों तक सीमित है। इसमें केवल वही महाविद्यालय शामिल किए गए हैं। जहाँ संगीत विषय की पढ़ाई होती है। साथ ही अध्ययन की समय-सीमा, उत्तरदाताओं की सीमित संख्या और संसाधनों की उपलब्धता भी इसकी सीमाओं में शामिल हैं फिर भी प्रयास किया गया है कि अध्ययन वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता के साथ किया जाए। हरियाणा प्रांत में शिक्षा अनेक पड़ावों का सफ़र तय करते हुए वर्तमान समय तक पहुंचा है।

औपनिवेशिक काल में उच्च शिक्षा की स्थिति: हरियाणा क्षेत्र में उच्च शिक्षा की स्थिति प्रारंभिक काल में अत्यंत न्यून और असंगठित थी। "सन् 1927 तक इस क्षेत्र में कोई भी महाविद्यालय नहीं था। यहां के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु दिल्ली, लाहौर अथवा अन्य बड़े शिक्षा केंद्रों की ओर रुख करना पड़ता था। इस अभाव की पूर्ति के लिए 1927 में रोहतक में पहला इंटरमीडिएट स्तर का महाविद्यालय स्थापित हुआ। अगले कुछ वर्षों में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में धीमी गति से विकास होता रहा। इस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति तक हरियाणा क्षेत्र में केवल 6 महाविद्यालय कार्यरत थे। जबकि पड़ोसी राज्य पंजाब में कॉलेजों की संख्या आठ गुना अधिक थी।"[i]

स्वतंत्रता पश्चात उच्च शिक्षा का विस्तार: स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हरियाणा में शिक्षा क्षेत्र में विशेष रूप से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। "वर्ष 1956 में प्रदेश के पहले विश्वविद्यालय 'कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय' की स्थापना की गई।"[ii] प्रारंभ में यह विश्वविद्यालय केवल संस्कृत शिक्षा के संवर्धन हेतु कार्यरत था। "किंतु 1961 में इसे एक बहुसंकाय विश्वविद्यालय के रूप में विस्तारित किया गया। इसमें भाषा, कला, विज्ञान, इंजीनियरिंग आदि संकाय प्रारंभ किए गए

जिससे हजारों विद्यार्थियों को एम.ए., एम.एस.सी. तथा पी.एच.डी. स्तर की उच्च शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला। वर्ष 1966 तक प्रदेश में महाविद्यालयों की संख्या 40 तक पहुँच गई जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है। इस अवधि में न केवल छात्रों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। बल्कि महिला शिक्षा का भी तीव्र विस्तार हुआ। इन 40 महाविद्यालयों में से 9 महाविद्यालय विशेष रूप से कन्याओं के लिए आरक्षित थे जो शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।"[iii]

वर्तमान समय में हरियाणा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक समृद्ध और संगठित राज्य के रूप में उभर चुका है। "आज प्रदेश में 51 से अधिक विश्वविद्यालय कार्यरत हैं।"[iv] जिनमें सरकारी एवं निजी दोनों प्रकार के विश्वविद्यालय शामिल हैं। इन विश्वविद्यालयों से संबद्ध सैकड़ों महाविद्यालयों में विभिन्न विषयों जैसे विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, कृषि, शिक्षा और ललित कला की उच्च स्तरीय शिक्षा दी जा रही है। यह स्पष्ट संकेत है कि प्रदेश ने शिक्षा के क्षेत्र में एक लंबी यात्रा तय की है। और अब वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक अग्रणी राज्य के रूप में पहचान बना रहा है।

संगीत शिक्षा के आधुनिकीकरण में विद्वानों का योगदान: भारतीय संगीत शिक्षा को औपचारिक शैक्षणिक ढांचे में स्थापित करने का श्रेय मुख्यतः पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर और पंडित विष्णु नारायण भातखंडे को जाता है। इन दोनों महान संगीतज्ञों के प्रयासों से संगीत को पहली बार संस्थागत रूप में प्रस्तुत किया गया। और इसे अन्य शैक्षणिक विषयों की भाँति विद्यालयों और महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया गया। इन्हीं विद्वानों द्वारा प्रतिपादित शिक्षण-पद्धतियाँ आज भी भारत के विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों में विशेषकर हरियाणा राज्य में संगीत शिक्षा के मूल आधार बनी हुई हैं।

हरियाणा में शास्त्रीय संगीत शिक्षा का विकास: हरियाणा में शास्त्रीय संगीत शिक्षा का विकास क्षेत्र विशेष के अनुसार विभिन्न समयावधियों में हुआ। कुछ क्षेत्रों में यह शिक्षा अपेक्षाकृत पहले प्रारंभ हुई। जबकि कुछ क्षेत्रों में इसका विस्तार हाल के वर्षों में हुआ है।

चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय: क्षेत्रीय उच्च शिक्षा का केंद्र

सिरसा जिले में स्थित चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय (CDLU) इस क्षेत्र का एकमात्र विश्वविद्यालय है। जिसकी स्थापना 2003 में हुई थी। यह विश्वविद्यालय विभिन्न संकायों के अंतर्गत स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध स्तर तक की शिक्षा प्रदान करता है। इसके अधीन वर्तमान में लगभग 31 महाविद्यालय संचालित हैं जिनमें सरकारी एवं निजी दोनों प्रकार के संस्थान शामिल हैं जिनकी सूची निम्न अनुसार है:

सरकारी महाविद्यालय

1. राजकीय नैशनल महाविद्यालय, सिरसा
2. राजकीय कन्या महाविद्यालय, सिरसा
3. राजकीय महाविद्यालय, मण्डी डबवाली
4. राजकीय महाविद्यालय, ऐलनाबाद

इन महाविद्यालयों में मानविकी, विज्ञान, वाणिज्य तथा संगीत विषयों में शिक्षा प्रदान की जाती है।

गैर-सरकारी महाविद्यालय

सिरसा जिले में अनेक निजी महाविद्यालय उच्च शिक्षा में सक्रिय योगदान दे रहे हैं। इनमें से कुछ प्रमुख महाविद्यालय निम्नलिखित हैं:

1. सी.एम.के. नैशनल महाविद्यालय, सिरसा
2. शाह सतनाम जी महाविद्यालय, शाहपुर
3. शाह सतनाम जी कन्या महाविद्यालय, सिरसा
4. श्री गुरु हरिसिंह महाविद्यालय, श्री जीवननगर

5. एम.पी. कन्या महाविद्यालय, मण्डी डबवाली
6. जनता कन्या महाविद्यालय, ऐलनाबाद
7. माता हरकी देवी कन्या महाविद्यालय, ओढ़ान
8. जन नायक चौ. देवीलाल इंजीनियरिंग कॉलेज, सिरसा
9. शाह सतनाम जी मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी कॉलेज, सिरसा
10. बी.एस.के. कन्या महाविद्यालय, मंडी डबवाली
11. शहीद भगत सिंह एजुकेशन कॉलेज, कलांवाली
12. सी.आर.आर. एजुकेशन कॉलेज, ऐलनाबाद
13. जे.जी. एजुकेशन कॉलेज, हिसार रोड, सिरसा
14. एल.एच.आर.पी. लॉ कॉलेज, सिरसा
15. सी.आर.डी.ए.वी. कन्या महाविद्यालय, ऐलनाबाद
16. एच.एस.एस. एजुकेशन कॉलेज, रानिया
17. ऐपैक्स एजुकेशन कॉलेज, ऐलनाबाद

चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, "सिरसा की स्थापना 2 अप्रैल 2003 को हुई और इसका उद्घाटन 2 अगस्त 2009 को तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा किया गया था। यह विश्वविद्यालय हरियाणा प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालयों की तरह बहुसंकाय विश्वविद्यालय है। जिसमें विभिन्न विषयों के अध्ययन के लिए विभाग और महाविद्यालय स्थापित किए गए हैं। संगीत शिक्षा का समावेश इस विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण विभागों में किया गया है। जिससे क्षेत्रीय स्तर पर सांस्कृतिक विकास और संगीत शिक्षा की दिशा में एक सकारात्मक कदम उठाया गया है। इस विश्वविद्यालय के 6 महाविद्यालयों में संगीत विषय की शिक्षा दी जा रही है। जो इस क्षेत्र में विद्यार्थियों को संगीत की गहरी समझ और प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।"[v] चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय के अंतर्गत संगीत शिक्षा प्रदान करने वाले महाविद्यालयों की सूची में प्रमुख हैं:

1. सी.एम. के. नैशनल महाविद्यालय, सिरसा
2. माता हरकी देवी एजुकेशन महाविद्यालय, ओढ़ान
3. राजकीय नैशनल महाविद्यालय, सिरसा
4. राजकीय महाविद्यालय, मण्डी-डबवाली
5. राजकीय कन्या महाविद्यालय, सिरसा
6. जननायक चौ. देवीलाल महाविद्यालय, सिरसा

यह महाविद्यालय सिरसा जिले में स्थित हैं। और सभी में संगीत विषय का शिक्षण प्रदान किया जा रहा है। जिससे विद्यार्थियों को शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, गायन, वादन आदि में दक्षता प्राप्त होती है। उपरोक्त के विश्लेष्ण से निम्न अनुसार पहलु सामने आते हैं:

संगीत शिक्षा का वितरण और विद्यार्थियों की स्थिति: चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय के अंतर्गत कुल 03 संगीत शिक्षक हैं जो 64 विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। महाविद्यालयों में भी संगीत शिक्षा की स्थिति को देखा जाए तो राजकीय नैशनल महाविद्यालय, सिरसा में 2 शिक्षक हैं और यहां 150 विद्यार्थी संगीत का अध्ययन कर रहे हैं। इसी तरह राजकीय कन्या महाविद्यालय, सिरसा में 2 शिक्षक और 191 विद्यार्थी है। जो संगीत शिक्षा में सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। राजकीय महाविद्यालय, मण्डी-डबवाली में केवल 1 शिक्षक हैं और यहां पर संगीत विषय के कुल 30 विद्यार्थी हैं। जननायक चौ. देवीलाल महाविद्यालय, सिरसा और सी. एम. के. नैशनल महाविद्यालय, सिरसा में क्रमशः 1 और 3 शिक्षक हैं और विद्यार्थियों की संख्या 28 और 66 है।

शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात: महाविद्यालयों में संगीत विषय के लिए अध्यापकों की संख्या में कमी देखी जा रही है। उदाहरण स्वरूप राजकीय महाविद्यालय, मण्डी-डबवाली में केवल 1 शिक्षक है जबकि राजकीय नैशनल महाविद्यालय, सिरसा और राजकीय कन्या महाविद्यालय, सिरसा में 2-2 शिक्षक हैं। यह अनुपात अधिक विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा प्रदान करने के लिए अपर्याप्त है। और एक बड़े शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात की आवश्यकता महसूस होती है।

संगीत शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु सुझाव:

- संगीत विषय प्राथमिक स्तर से लागू करवाया जाए।
- संगीत में करियर विकल्प जैसे: गायन, वादन, संगीत शिक्षण, साउंड डिजाइन, म्यूजिक प्रोडक्शन, संगीत निर्देशन आदि विषयों को शामिल कर विद्यार्थियों को व्यवसाय के अवसर से अवगत कराना।
- संगीत संसाधन उपलब्ध करवाना तथा समय-समय पर रिपेयर करवाना।
- समय-समय पर वर्कशॉप, सेमीनार सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आयोजित कराए जाए।
- संगीत के क्रियात्मक और सैद्धांतिक दोनों पहलुओं को साथ लेकर चलना।
- यूजीसी और राज्य सरकार के नियमानुसार प्रत्येक विद्यालय, महाविद्यालय में स्थायी और विषय-विशेषज्ञ शिक्षक नियुक्त किए जाएं।
- शिक्षकों के लिए निरंतर प्रशिक्षण कार्यक्रम अनिवार्य किया जाए।
- पाठ्यक्रम में 'संगीत में करियर के अवसर' नामक एक इकाई शामिल की जाए।

निष्कर्ष: देखा जा सकता है कि विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा का प्रसार धीरे-धीरे बढ़ रहा है। हालांकि विद्यार्थियों की संख्या, महाविद्यालयों के बीच असंतुलित है। विशेष रूप से राजकीय महाविद्यालय, मण्डी-डबवाली में विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम है (30 विद्यार्थी)। वहीं राजकीय कन्या महाविद्यालय, सिरसा में विद्यार्थियों की संख्या उच्चतम है। जो संगीत विषय के प्रति विद्यार्थियों की बढ़ती रुचि को दर्शाता है। जबकि चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय और इसके महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा का प्रयास किया जा रहा है फिर भी शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए संरचनात्मक सुधार की आवश्यकता है। संगीत विषय को एक सम्मानित और पूर्णरूप से व्यवस्थित पाठ्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जिसमें अधिक शिक्षक और संसाधनों का समावेश हो। संगीत शिक्षा के मामले में चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा ने उल्लेखनीय प्रयास किए हैं लेकिन अध्यापकों की संख्या में सुधार और पाठ्यक्रम के प्रभावी संचालन की दिशा में अभी और प्रयास की आवश्यकता है। संगीत के प्रति विद्यार्थियों का बढ़ता रुझान और संगीत शिक्षा में व्यावहारिक दक्षता की कमी इस क्षेत्र में सुधार के अवसरों को दर्शाती है। तथ्यों से यह भी संकेत मिलता है कि विशेषकर राजकीय कन्या एवं नैशनल महाविद्यालयों में इस विषय के प्रति छात्रों की रुचि अपेक्षाकृत अधिक है। जिला सिरसा के महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा के हालात और उसमें हो रहे परिवर्तनों की स्थिति को जानने के उद्देश्य से यह शोध अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि संगीत शिक्षा के क्षेत्र में किस प्रकार के सुधार की आवश्यकता महसूस की जा रही है। और विभिन्न शिक्षकों के दृष्टिकोण क्या हैं।

इस अध्ययन में साक्षात्कार द्वारा जिला सिरसा के विभिन्न महाविद्यालयों के संगीत विभाग के शिक्षकों से संगीत शिक्षा के संबंध में अपने विचार और अनुभव साझा किए हैं। साक्षात्कारों के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा के क्षेत्र में संगीत की भूमिका क्या है? विद्यार्थियों की रुचि को कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है? और संगीत शिक्षा के साथ जुड़ी चुनौतियाँ क्या हैं? साक्षात्कारों में शामिल शिक्षकों ने अपने कार्यक्षेत्र में संगीत की शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की है जिनसे इस अध्ययन को अधिक समृद्ध और विस्तृत दृष्टिकोण प्राप्त हुआ है। साक्षात्कारों में संगीत शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए विभिन्न महाविद्यालयों के शिक्षकों से साक्षात्कार लिया गया जिनमें प्रमुख रूप से डॉ. सरस्वती चतुर्वेदी, डॉ. दीपक वर्मा, डॉ. यादविंदर सिंह, प्रोफेसर सीमा, करवीर कौशिक, प्रवीण शर्मा और श्रीमती रेनू गुप्ता आदि शामिल हैं। इन शिक्षकों ने अपने संस्थानों में संगीत शिक्षा के अनुभव, पाठ्यक्रम, विद्यार्थियों की भागीदारी और संगीत के विभिन्न पहलुओं के बारे में चर्चा की है।

संदर्भ:

[i] यादव, डॉ. के. सी. हरियाणा का इतिहास (1803-1966) तक, खण्ड-2, 2012, मनोहर प्रकाशन पृष्ठ-300
[ii] वही
[iii] वही
[iv] https://www.aubsp.com/
[v] पाल ऋषि, हरियाणा प्रदेश के महाविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत शिक्षा की स्थिति : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (शोध प्रबंध), अगस्त 2019, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र पृष्ठ – 107